K. K. SUKUMARAN VAIDYAR'S

K K SUKUMARAN MUTTIKULANGARA VAIDYASALA

मुट्टीकुलंगरा तेल

३०० साल पुरानी परंपरा से एक जांची परखी औषधि
एक अनोखी औषधि की एक रोमांचक कहानी

यह कहानी शुरू होती है लगभग 300 साल पहले से जब मुट्टीकुलंगरा वंश के एक विख्यात वेलंदी पंडित अपने खेतों में काम के लिए आए थे और उन्होंने मछली पकड़ने का फैसला किया। उस दिन उन्होंने काफ़ी मछलियां पकड़ी,फिर उन्होंने उन्हें साफ़ किया, काटा और टुकड़ों को नज़दीक लगे एक पेड़ के पत्तों में लपेट लिया।

जब वे घर पहुंचे तो उन्हें यह देख कर बहुत अचंभा हुआ कि उनमें से कुछ टुकड़े आपस में चिपक गए थे। इस जानकारी और आयुर्वेदिक के अपने गहरे ज्ञान के प्रयोग से, वेलंदी पंडित ने एक फार्मूले को एक अचूक फॉर्मूला बनाया, जो अब मुट्टीकुलंगरा तेल के नाम से प्रसिद्ध है।

छः पीढ़ियां। वही भरोसेमंद समाधान।

यह गुप्त फार्मूला अगली पीढ़ियों को दे दिया गया था। और मुट्टीकुलंगरा तेल अब भी उसी शुद्धता और परंपरा के साथ बनाया जाता है और इसे के.के. सुकुमारन मुट्टीकुलंगरा वैद्यशाला में इलाज के लिए इस्तेमाल किया जाता है,जिसे आजकल परिवार की छठी पीढ़ी चला रही है।

दर्द को अलविदा कहिए!

इसकी विधि, 6 पीढ़ियों से 300 से भी ज़्यादा सालों से कड़ी सुरक्षा में रखा एक राज़ है,यह आयुर्वेदिक तत्त्वों का एक विशेष मिश्रण है। यह तेल विभिन्न प्रकार के दर्दों, मोच और हड्डी टूटने पर राहत पहुंचाने में बहुत असरदार साबित हुआ है। इस तेल को शरीर की सामान्य आयुर्वेदिक मालिश के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। ज्यादातर, इसे स्वयं ही लगाया जा सकता है और यह हर आयु के लोगों के लिए एक समान प्रभावी है।

इन सब में राहत देने बहुत असरदार साबित हुआ है:

- मासपेशियों का दर्द
- पीठ का दर्द
- जोड़ों का दर्द
- मोच
- खरोंचें
- सूजन

प्रयोग की विधि:

सुबह और शाम 10 से 15 मिनट तकलीफ़ वाली जगह तेल की ऊपर से नीचे की ओर मालिश करें। दर्द बहुत ज़्यादा हो तो एक सूती कपड़े को तेल में डुबो कर उसकी पट्टी बांध लें और इस पर तेल डालते रहें। फिर इसे साधारण पानी से धो लें। गरम पानी या गर्म पानी की थैली इस्तेमाल न करें।